पांडवों की रक्षा

प्र.1) किसने किससे कहा।

अ) यही मेरे सच्चे मित्र होने का सबुत है।
कारगीर ने पांडवों से कहा।

आ) मैं तो प्यास से मरी जा रही हूँ।
कुंती ने पांडवों से कहा।

इ) हाय! मैं अब क्या करूँ?
ब्राम्हण ने अपनी पत्नी से पुछा।

ई) "प्राणनाथ, मुझे मरने का कोई दुःख नहीं है।"
ब्राम्हण की पत्नी ने ब्राम्हण से कहा।

उ) "विप्रवर, आप इस बात की चिंता छोड़ दें।
कुंती ने ब्राम्हण से कहा।

ऊ) आप हमारी अतिथी हैं।
ब्राम्हण ने कुंती से कहा।

ए) "यह तुम कैसा दुस्साहस करने चली हो, माँ।"
युधिष्ठिरने अपनी माँ कुंती से पुछा।

ऐ) "दुष्ट राक्षस! जरा विश्राम तो करने दें।
भीम ने राक्षस से कहा।

ओ) भीम को बकासूर के पास भेजना हमारा कर्तव्य है।
कुंती ने युधिष्ठिर से कहा।

औ) "अच्छा! अब उठो!"
भीम ने बकासूर से कहा।

प्र.२) जोड़िया लगाएँ

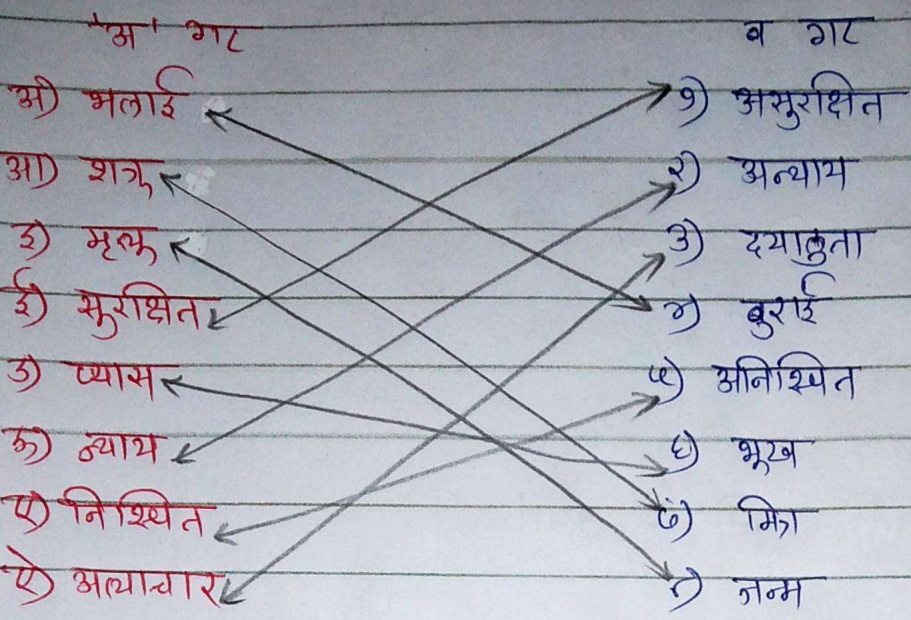

प्र.३) दिए गए वाक्य सही या गलत वह लिखें।

अ) पांडव माता के साथ वारणावत चले गए। सही

आ) पांडवों के आगमन की बात सुनकर नगरवासी दुःखी हो गए। गलत

इ) पांडवों की रक्षा का प्रबंध करने हस्तिनापुर से सुरंग बनानेवाला कारागिर वारणावत भेजा गया। सही

ई) पांडव और माता भवन में लगाई आग में जल गए। गलत

उ) कुंती चलते चलते थक गई। सही

ऊ) पांडव और कुंती एक ब्राम्हण के यहा रहने लगे। सही

ए) राक्षस ने भीम को अपना भोजन बना लिया। गलत

ऐ) भीमसेन ने लाश को नगर के फाटक पर पटक दिया। सही

प्र.४) शब्दोंके अर्थ लिखें।

अ) नगरवासी - नगर में रहनेवाले लोग उ) परिचय - जान पहचान होना

आ) षड़यंत्र - गुप्त तरिके से की कारवाई ऊ) चौकन्ना - सतर्क

इ) सुरक्षित - अच्छी तरह रखा हुआ ए) चिंतामुक्त - निश्चिंत होना

ई) दुबला - कमजोर ऐ) हठ - जिद्द